विष्णु चालीसा

॥ दोहा ॥

विष्णु सुनिए विनय सेवक की चितलाय।

कीरत कुछ वर्णन करूँ दीजै ज्ञान बताय॥

हिन्दीपथ.कॉम

॥ चौपाई ॥

नमो विष्णु भगवान खरारी,

कष्ट नशावन अखिल बिहारी।

प्रबल जगत में शक्ति तुम्हारी,

त्रिभुवन फैल रही उजियारी।

सुन्दर रूप मनोहर सूरत,

सरल स्वभाव मोहनी मूरत।

तन पर पीताम्बर अति सोहत,

बैजन्ती माला मन मोहत।

शंख चक्र कर गदा बिराजे,

देखत दैत्य असुर दल भाजे।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सत्य धर्म मद लोभ न गाजे,

काम क्रोध मद लोभ न छाजे।

सन्तभक्त सज्जन मनरंजन,

दनुज असुर दुष्टन दल गंजन।

सुख उपजाय कष्ट सब भंजन,

दोष मिटाय करत जन सज्जन।

पाप काट भव सिन्धु उतारण,

कष्ट नाशकर भक्त उबारण।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

करत अनेक रूप प्रभु धारण,

केवल आप भक्ति के कारण।

धरणि धेनु बन तुमहिं पुकार,

तब तुम रूप राम का धारा।

भार उतार असुर दल मारा,

रावण आदिक को संहारा।

आप वाराह रूप बनाया,

हिरण्याक्ष को मार गिराया।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

धर मत्स्य तन सिन्धु बनाया,

चौदह रतनन को निकलाया।

अमिलख असुरन द्वन्द मचाया,

रूप मोहनी आप दिखाया।

देवन को अमृत पान कराया,

असुरन को छबि से बहलाया।

कूर्म रूप धर सिन्धु मझाया,

मन्द्राचल गिरि तुरत उठाया।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

शंकर का तुम फन्द छुड़ाया,

भस्मासुर को रूप दिखाया।

वेदन को जब असुर डुबाया,

कर प्रबन्ध उन्हें ढुँढवाया।.

मोहित अनकर खलहि नचाया,

उसही कर से भस्म कराया।

असुर जलंधर अति बलदाई,

शंकर से उन कीन्ह लड़ाई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हार पार शिव सकल बनाई,

कीन सती से छल खल जाई ।

सुमिरन कीन तुम्हें शिवरानी,

बतलाई सब विपत कहानी।

तब तुम बने मुनीश्वर ज्ञानी,

वृन्दा की सब सुरति भुलानी।

देखत तीन दनुज शैतानी,

वृन्दा आय तुम्हें लपटानी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हो स्पर्श धर्म क्षति मानी,

हना असुर उर शिव शैतानी।

तुमने ध्रुव प्रहलाद उबारे,

हिरणाकुश आदिक खल मारे।

गणिका और अजामिल तारे,

बहुत भक्त भव सिन्धु उतारे।

हरहु सकल संताप हमारे,

कृपा करहु हरि सिरजन हारे।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

देखहुँ मैं निज दरश तुम्हारे,

दीन बन्धु भक्तन हितकारे।

चहत आपका सेवक दर्शन,

करहु दया अपनी मधुसूदन।

जानूं नहीं योग्य जप पूजन,

होय यज्ञ स्तुति अनुमोदन।

शीलदया सन्तोष सुलक्षण,

विदित नहीं व्रतबोध विलक्षण।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

करहुँ आपका किस विधि पूजन,

कुमति विलोक होत दुख भीषण।

करहुँ प्रणाम कौन विधिसुमिरण,

कौन भांति मैं करहु समर्पण।

सुर मुनि करत सदा सेवकाई,

हर्षित रहत परम गति पाई।

दीन दुखिन पर सदा सहाई,

जिन जन जान लेव अपनाई।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

पाप दोष संताप नशाओ,

भव बन्धन से मुक्त कराओ।

सुत सम्पति दे सुख उपजाओ,

निज चरनन का दास बनाओ।

निगम सदा ये विनय सुनावै,

पढै सुनै सो जन सुख पावै।

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा